अध्याय 15

भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- किस प्रकार भारत में यूरोपीय कम्पनियों ने अपने कदम जमाये और अन्ततः ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कंपनी भारत में स्थायी रूप से काबिज हो गयी।
- भारत में यूरोपीय शक्तियों के आगमन में और उसे यहाँ पर अपने पैर जमाने में कौन-कौन से सहायक घटनाक्रम साधक के रूप में रहे।
- यूरोपियों की आर्थिक एवं सामाजिक नीतियों ने कैसे मुगल सत्ता को चुनौती दी।

प्रमुख यूरोपीय कम्पनियाँ (European Companies)

भारत अपनी भौतिक एवं व्यापारिक संपदा के कारण हर काल में विदेशियों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा। 15वीं शताब्दी में हुई कुछ भौगोलिक खोजों ने संसार के विभिन्न देशों में आपसी संपर्क स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया। 1453 ई. में कुस्तुन्तुनिया के पतन के साथ ही यूरोप जाने वाले स्थल मार्ग पर तुर्कों का कब्जा हो गया। इसके कारण पश्चिम यूरोप के राष्ट्रों ने नए व्यापारिक मार्गों की तलाश प्रारंभ की। 15वीं-16वीं शताब्दी में भारत में यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों का आगमन, एशिया सहित समस्त विश्व के व्यापार एवं राजनीति के क्षेत्र में एक राजनीतिक घटना घटी थी। भारत में यूरोपवासियों के आने के क्रम में सर्वप्रथम पुर्तगाली थे। इसके बाद डच, अंग्रेंज, डेनिश और फ्रांसीसी आए।

पुर्तगाली

प्रथम पुर्तगाली यात्री, वास्को-डि-गामा का आगमन 1498 ई. में हुआ। उस समय कालीकट का शासक जमोरिन था। वास्को-डि-गामा के बाद भारत आने वाला दूसरा पुर्तगाली यात्री पेड्रो अल्बारेज कैब्राल था। 1500 ई. में कैब्राल के नेतृत्व में जहाज़ भेजे गए। अरब व्यापारियों ने पुर्तगालियों का मार्ग अवरुद्ध करने की कोशिश की। वास्को-डि-गामा 1502 ई. में दो जहाज़ी बेड़ों के साथ दूसरी बार भारत आया। 1503 ई. में पुर्तगालियों द्वारा भारत केकोचीन में अपना पहला दुर्ग स्थापित किया गया।

फ्रांसिस्को-डि-अल्मीडा (1505–1509 ई.)

1505 ई. में प्रथम पुर्तगाली वायसराय के रूप में फ्रांसिस्को-डि-अल्मीडा का भारत आगमन हुआ। उसने कुछ किले निर्मित करवाए, यथा— अजानीवा, कीवा, बेसीन एवं कोचीन। उसने मिस्र, तुर्की और बेगड़ा की सेना के साथ संघर्ष किया। इसी संघर्ष के बाद होरमुज पर पुर्तगालियों का कब्जा हो गया।

अल्फांसो-डि-अल्बुकर्क (1509–1515 ई.)

अल्बुकर्क ने 1510 ई. में बीजापुर के शासक युसूफ आदिलशाह से गोवा को छीन लिया, जो कालांतर में पुर्तगाली व्यापारिक केंद्रों की राजधानी बनाई गई। 1515 ई. में इसकी मृत्यु हो गई। 'ब्लू वाटर पॉलिसी' अल्मीड़ा की थी। 1509 ई. में अल्मीडा के स्थान पर अल्बुकर्क को वायसराय नियुक्त किया गया। अल्बुकर्क ने ही भारत में पुर्तगाली राज्य की स्थापना की।

नीनू-डि-कुन्हा (1529–1538 ई.)

नीनू-डि-कुंहा ने 1530 ई. में कोचीन की जगह गोवा को अपनी राजधानी बनाई और मुगल बादशाह बहादुर शाह के साथ संघर्ष में इसकी मृत्यु हो

गई। इसने सैनथोमा (मद्रास), हुगली (बंगाल) और दीव (काठियावाड़) में पुर्तगाली बस्तियों की स्थापना की।

जोवा-डि-कैस्ट्रो (1542–1545 ई.)

नीनू-डि-कुन्हा के बाद जोआ-द-कैस्ट्रो पुर्तगाली गवर्नर बनकर आया। उसने गोवा पर आक्रमण करने वाली बीजापुर की सेनाओं को पराजित किया। पुर्तगालियों ने अकबर की अनुमति से हुगली में तथा शाहजहाँ की अनुमति से बन्देल में कारखाने स्थापित किए। पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर से होने वाले व्यापार पर एकाधिपत्य प्राप्त कर यहाँ से गुज़रने वाले अन्य जहाज़ों से कर की वसूली भी की। जोवा डी कैस्ट्रोन ने पश्चिमी भारत के चाऊल (1531), दीव (1532), सॉलसेट और बेसिन (1536) और बम्बई पर अधिकार कर लिया। उन्होंने कार्ट्ज-अर्माडा काफिला पद्धति के द्वारा भारतीय तथा अरबी जहाज़ों का कार्ट्ज या परमिट के बिना अरब सागर में प्रवेश वर्जित कर दिया। यहाँ तक कि पुर्तगाली अधिकार वाले क्षेत्रों से व्यापार करने के लिए मुगल बादशाह अकबर को भी कार्ट्ज लेना पड़ा। पुर्तगाली गवर्नर अल्फांसो डिसूज़ा (1542–45 ई.) के साथ प्रसिद्ध जेसुइट सन्त फ्रांसिस्को ज़ेवियर भारत आया। पुर्तगालियों की भारतीय जनता के प्रति धार्मिक असहिष्णुता की भावना तथा गुप्त व्यापार पद्धति के कारण इनका पतन हो गया।

पुर्तगालियों का योगदान (Contribution of Portuguese)

पुर्तगालियों के भारत में आगमन से भारत में तम्बाकू की खेती, जहाज़ निर्माण तथा प्रिण्टिंग प्रेस (1556 ई.) की शुरूआत हुई। इसके अलावा भारत में गॉथिक स्थापत्यकला का आगमन हुआ। औषधीय वनस्पति से सम्बन्धित पहले वैज्ञानिक ग्रन्थ का 1563 ई. में गोवा में प्रकाशन हुआ। पुर्तगाली मध्य अमेरिका से तम्बाकू, आलू और मक्का भारत लाए थे।

डच

भारत में व्यापारियों के रूप में पुर्तगालियों के बाद डचों का आगमन हुआ। डच हॉलैण्ड या नीदरलैण्ड्स के निवासी थे। 1596 ई. में कॉरनेलिस-हाउटमैन आशा अन्तरीप (केप ऑफ गुड होप) होते हुए सुमात्रा तथा बेन्थाम पहुँचने वाला प्रथम डच नागरिक था।

1602 ई. में डच (हॉलैण्ड) संसद द्वारा पारित प्रस्ताव से एक संयुक्त डच ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना हुई। इस कम्पनी को डच संसद द्वारा 21 वर्षों के लिए भारत और पूरब के देशों के साथ व्यापार करने, आक्रमण और विजय करने के सम्बन्ध में अधिकार-पत्र प्राप्त हुआ।

भारत में डचों ने कोरोमण्डल तट पर 1605 ई. में मसूलीपट्टम में अपना पहला कारखाना स्थापित किया। डचों ने चन्द्रगिरि के राजा के साथ समझौता करके पुलीकट में एक अन्य फैक्ट्री की स्थापना की। पुलीकट में डच अपने स्वर्ण-ए-पगोडा (सिक्के) ढालते थे। डचों ने 1616 ई. में सूरत में एवं 1641 ई. में विमलीपट्टम में फैक्ट्रियां स्थापित की। चिनसुरा के डच किले को गुस्तावुस फोर्ट के नाम से जाना जाता था।

डच लोग मसूलीपट्टनम से नील का निर्यात करते थे। मुख्यत: डच लोग भारत से सूती वस्त्र का व्यापार करते थे। सूरत स्थित डच व्यापारिक निदेशालय डच ईस्ट इंडिया कम्पनी का सर्वाधिक लाभ कमाने वाला प्रतिष्ठान था।

तालिका 15.1: भारत में डचों द्वारा स्थापित प्रमुख कारखाने

कारखाने	स्थापना वर्ष
पुलीकट	1610
सूरत	1616
विमलीपत्तनम्	1641
करिकाल	1645
चिनसुरा	1653
बालासोर, नेगापट्टनम्	1658
कोचीन	1663

डचों ने पुर्तगालियों को पराजित किया और आधुनिक कोच्चि में उन्होंने 1663 ई. में फोर्ट विलियम का निर्माण किया था। डचों ने भारत में पुर्तगालियों को समुद्री मार्ग से एक तरह से निष्कासित कर दिया, लेकिन अंग्रेज़ों के नौसैनिक शक्ति के सामने डच नहीं टिक सके।

डचों और अंग्रेज़ों के बीच 1759 ई. में बेदरा नामक स्थान पर युद्ध हुआ जिसमें अंग्रेज़ी नौसेना की श्रेष्ठता साबित हो गई। इस युद्ध के परिणामस्वरूप डच भारतीय व्यापार से बाहर हो गए। डच कम्पनी का सरकार के सीधे नियंत्रण में होना और कम्पनी के भ्रष्ट एवं अयोग्य पदाधिकारी तथा कर्मचारी का होना, भारत में डचों की असफलता के प्रमुख कारण थे।

अंग्रेज़

पुर्तगालियों और डचों की तरह अंग्रेज़ भी भारत में व्यापार के लिए आए। 1599 ई. में जॉन मिल्डेनहाल नामक ब्रिटिश यात्री थल मार्ग से भारत आया। इसी वर्ष ब्रिटेन में मर्चेण्ट एडवेन्चर कम्पनी की स्थापना हुई। 31 दिसम्बर, 1600 में ब्रिटेन की महारानी एलिज़ाबेथ ने पूरब की ओर व्यापार करने का चार्टर मर्चेण्ट एडवेन्चर कम्पनी को दे दिया। मर्चेण्ट एडवेन्चर कम्पनी का पूरा नाम द गवर्नर एण्ड कम्पनी ऑफ मर्चेण्ट्स ट्रेडिंग इन टू द इस्ट इण्डीज था। यह अधिकार-पत्र आरम्भ में केवल 15 वर्षों के लिए दिया गया था। 1608 ई. में ब्रिटिश प्रतिनिधि विलियम हॉकिन्स जहाँगीर के दरबार में आया। हॉकिन्स जहाँगीर के नाम जेम्स प्रथम का पत्र लेकर आया था। जहाँगीर ने उसका स्वागत किया। उसे 400 जात रैंक का मनसब एवं जागीर प्रदान कर खान की उपाधि दी। हॉकिन्स ने अंग्रेज़ों के लिए सूरत में एक फैक्ट्री खोलने की अनुमति माँगी।

अंग्रेज़ी व्यापारिक कोठियों की स्थापना

पुर्तगालियों को पराजित करने के कारण जहाँगीर अंग्रेज़ों से प्रभावित हुआ। परिणामस्वरूप 1613 ई. को जारी एक शाही फरमान (जहाँगीर की ओर से) द्वारा अंग्रेज़ों को सूरत में व्यापारिक कोठी स्थापित करने तथा मुगल राजदरबार में एक प्रतिनिधि रखने की अनुमति प्राप्त हो गई। थॉमस एल्डवर्थ

के अधीन सूरत में व्यापारिक कोठी की स्थापना हुई। सर थॉमस रो ब्रिटेन के राजा जेम्स प्रथम के दूत के रूप में 1615 ई. को सूरत पहुँचे। वह मुगल दरबार में 1616 ई. से 1618 ई. तक रहे। इस बीच थॉमस-रो ने मुगल दरबार से साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में व्यापार करने तथा दुर्गीकरण की अनुमति प्राप्त कर ली। 1632 ई. में अंग्रेज़ों ने गोलकुण्डा के सुल्तान से एक सुनहरा फरमान प्राप्त कर 500 पैगोडा वार्षिक कर अदा करने के बदले गोलकुण्डा राज्य में स्थित बन्दरगाहों से व्यापार करने का एकाधिकार प्राप्त कर लिया। 1633 ई. में अंग्रेजों ने बालासोर और हरिहरपुरा स्थापित किया। 1639 ई. में फ्रांसिस डे नामक अंग्रेज़ को चन्द्रगिरि के राजा से मद्रास पट्टे पर प्राप्त हो गया। यहीं पर अंग्रेज़ों ने फोर्ट सेन्ट जॉर्ज नामक किले की स्थापना की।

1661 ई. में पुर्तगालियों ने अपनी राजकुमारी कैथरीन ब्रिगेंज़ा का विवाह ब्रिटेन के चार्ल्स द्वितीय से किया और बम्बई को दहेज के रूप में दिया। 1668 ई. में चार्ल्स ने बम्बई का द्वीप 10 पौण्ड वार्षिक किराया लेकर ईस्ट इंडिया कम्पनी को दे दिया। 1669 ई. से 1677 ई. तक बम्बई का गवर्नर गेराल्ड औंगियार ही वास्तव में बम्बई का संस्थापक था।

मुफ्त व्यापार की अनुमति

बंगाल में सर्वप्रथम अंग्रेज़ों को व्यापारिक छूट 1651 ई. में प्राप्त हुई। जब ग्रेब्रीयल बाउटन (डॉक्टर, जिसने शाहजहाँ की पुत्री का इलाज किया था) ने एक लाइसेन्स अंग्रेज़ी कम्पनी के लिए प्राप्त किया। इसके द्वारा 3000 रुपए वार्षिक कर के बदले में कम्पनी को बंगाल, बिहार, उड़ीसा में मुक्त व्यापार करने की अनुमति प्रदान की गई। मुगल सम्राट औरंगज़ेब और अंग्रेज़ों के बीच पहला संघर्ष 1686 ई. में हुगली में हुआ थी, बाद में जॉब चॉरनौक ने अगस्त, 1690 में सुतानाटी में एक अंग्रेज़ी कोठी स्थापित की। इस प्रकार ब्रिटिश भारत की भावी राजधानी की नींव पड़ी। 1698-99 ई. में बंगाल के सूबेदार अजीमुश्शान की स्वीकृति से कम्पनी को 1200 रु. के भुगतान देने पर सुतानाटी, गोविन्दपुर और कालिकाता की ज़मींदारी से प्राप्त हो गई।

जॉब चॉरनौक ने कालिकाता, गोविन्दपुर और सुतानाटी गाँव को मिलाकर आधुनिक नगर 'कलकत्ता' की स्थापना की। कलकत्ता में फोर्ट विलियम का निर्माण 1700 ई. में हुआ। 1700 ई. में स्थापित फोर्ट विलियम का प्रथम गवर्नर सर चार्ल्स आयर को बनाया गया तथा इसी समय बंगाल को मद्रास से अलग करके स्वतंत्र प्रेसीडेन्सी बना दिया गया।

नारिश मिशन

1698 ई. में इंग्लैण्ड के राजा विलियम तृतीय ने एक अन्य कम्पनी कायम की, जो इंग्लिश कम्पनी ट्रेडिंग इन द ईस्ट के नाम से जानी गई। इस कम्पनी ने अपने लिए व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त करने के उद्देश्य से सर विलियम नारिश को औरंगज़ेब के दरबार में राजदूत के रूप में भेजा। ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल के दबाव के कारण नई और पुरानी ईस्ट इंडिया कम्पनी का विलय 22 जुलाई, 1702 को कर दिया गया।

जॉन सरमन मिशन

1717 ई. में जॉन सरमन के नेतृत्व में एक ब्रिटिश दूतमण्डल कुछ और व्यापारिक रियायतें प्राप्त करने के उद्देश्य से मुगल बादशाह फर्रूखसियर के दरबार में पहुँचा। ब्रिटिश दूतमण्डल में एडवर्ड स्टीफेन्सन, विलियम हैमिल्टन (सर्जन) तथा खवाजा सेहूर्द (आर्मेनियन दूभाषिया) शामिल थे। सर्जन हैमिल्टन ने बादशाह को एक भयानक बीमारी से मुक्ति दिलाई, परिणामस्वरूप खुश होकर फर्रूखसियर ने बंगाल, हैदराबाद और गुजरात के सूबेदारों के नाम तीन फरमान जारी किए।

कम्पनी का मैग्नाकार्टा

1717 ई. में फर्रूखसियर द्वारा दिये गए फरमान द्वारा बम्बई में ढाले सिक्कों को समूचे मुगल साम्राज्य में चलाने के लिए छूट मिल गई। सूरत में फरमान द्वारा 10000 रु-वार्षिक देने पर कम्पनी के समस्त व्यापार को आयात-निर्यात कर से मुक्त कर दिया गया। फर्रूखसियर द्वारा कम्पनी को प्रदत्त फरमान कालान्तर में दूरगामी परिणाम वाला सिद्ध हुआ। ओरम महोदय ने इस फरमान को कम्पनी का महाधिकार-पत्र (मैग्नाकार्टा) की संज्ञा दी।

डेन

अंग्रेज़ों के बाद एक अन्य यूरोपीय देश डेनमार्क के निवासी 1616 ई. में भारत आए। तन्जौर जिले के ट्रांकेबोर में 1620 ई. में उन्होंने अपनी पहली फैक्ट्री की स्थापना की। इसके बाद बंगाल के सीरमपुर में 1676 ई. में उन्होंने अपनी दूसरी फैक्ट्री स्थापित की। 1845 ई. में डेन ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपनी सभी फैक्ट्रियाँ ब्रिटिश कम्पनी को बेच कर भारत से वापस लौट गए।

फ्रांसीसी

भारत आने वाली फ्रेंच ईस्ट इंडिया अंतिम यूरोपीय शक्ति थी। 1664 ई. में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी का गठन हुआ। फ्रेंच कंपनी का नाम कम्पने देस इण्डसे ओरियंटलेस रखा गया था। 1667 ई. में फ्रेंकोइस कैरो के नेतृत्व में एक अभियान दल भारत भेजा गया। फ्रेंकोइस कैरो के प्रयास से सूरत में 1668 ई. पहले व्यापारिक केंद्र स्थापित हुआ। 1669 ई. में व्यापारिक केंद्र स्थापित हुआ। 1669 ई. में मसूलीपट्टनम् में दूसरी कंपनी स्थापित हुई। 1672 ई. में सेण्ट टोपे में एक अन्य फैक्ट्री की स्थापना हुई। इसी बीच 1673 में कंपनी ने वलिकोण्डापुर के सूबेदार शेरखाँ लोदी से पुदुचेरी नामक एक गाँव प्राप्त किया, जिसे कालांतर में पाण्डिचेरी के नाम से जाना गया। फ्रैंको मार्टिन ने 1674 ई. में इस बस्ती का भार संभाल लिया। अंग्रेज़ समर्थित डचों ने फ्रांसीसियों से 1693 ई. में पाण्डिचेरी ले ली,किंतु 1697 ई. में रिजविक की संधि द्वारा इसे वापस लौटा दिया। पाण्डिचेरी के कारखाने में ही मार्टिन नें फोर्ट लुई का निर्माण कराया। 1706 ई.में की मृत्यु के बाद फ्रांसीसी बस्तियों एवं व्यापार के स्तर में कमी आई जून, 1720 ई. में फ्रांसीसी कंपनी का 'इण्डीज की चिर स्थायी कंपनी' के रूप में पुन: निर्माण हुआ। 1742 ई. के बाद व्यापारिक हित की पूर्ति हेतु फ्रांसीसियों ने राजनीतिक क्षेत्र में भी हस्तक्षेप शुरू किया, जिसके परिणामस्वरूप एंग्लो-फ्रांसीसी युद्ध हुए।

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-1748 ई.)

इस युद्ध का तात्कालिक कारण था—अंग्रेज़ कैप्टन बर्नेट के नेतृत्व में अंग्रेज़ी सेना द्वारा कुछ फ्रांसीसी जहाज़ों पर अधिकार कर लेना, बदलें में फ्रांसीसी गवर्नर (मॉरीशस) ला बूर्दने के सहयोग से डूप्ले ने मद्रास के गवर्नर मोर्स को आत्मसमर्पण के लिए मजबूर किया। इस युद्ध के समय

ही कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन ने महफूज़ खाँ के नेतृत्व में दस हज़ार सिपाहियों की एक सेना को फ्रांसीसियों पर आक्रमण के लिए भेजा। कैप्टन पैराडाइज़ के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना ने सेण्ट थोमे के युद्ध में नवाब को पराजित किया। यूरोप में अग्रेंज़ो और फ्रांसीसियों के बीच ऑस्ट्रिया के बीच में लड़े जा रहे उत्तराधिकार युद्ध की समाप्ति हेतु 1748 ई. में ऑक्सा-ला-शैपेल नामक संधि के सम्पन्न होने पर भारत में भी इन दोनों कंपनियों के बीच संघर्ष समाप्त हो गया।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1753–1754 ई.)

इस युद्ध के समय कर्नाटक के नवाब के पद को लेकर संघर्ष हुआ। चाँद साहब के नवाबी के लिए डूप्ले का सहयोग प्राप्त किया। दूसरी ओर डूप्ले ने मुजरफ्फजंग लिए दक्कन की सुबेदारी का समर्थन किया। अंग्रेज़ों ने अनवरुद्दीन और नासिरजंग को अपना समर्थन प्रदान किया। चाँद साहब ने 1749 ई. में अम्बूर में अनवरुद्दीन को पराजित कर मार डाला। मुजरफ्फरजंग दक्कन की सूबेदारी हेतु अपने भाई नासिरजंग से पराजित हुआ, लेकिन 1750 ई. में नासिर की मृत्यु के बाद वह दक्कन का सूबेदार बन गया। इस समय दक्षिण भारत में फ्रांसीसियों का प्रभाव चरम पर था। इसी बीच रॉबर्ट क्लाइव जो इंग्लैण्ड से मद्रास एक किरानी के रूप में आया था, ने 1751 ई. 500 सिपाहियों के साथ धारवाड़ पर धावा बोलकर कब्ज़ा कर लिया। शीघ्र ही फ्रांसीसी सेना को आत्मसमर्पण हेतु विवश होना पड़ा और चाँद साहब की हत्या कर दी गई। डूप्ले के स्थान पर गोडेहू को 1 अगस्त, 1754 को गवर्नर बनाया गया। गोडेहू ने अंग्रेज़ों से पाण्डिचेरी की संधि कर ली। इस संधि के द्वारा अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियों ने मुग़ल सम्राट या अन्य भारतीय नरेशों द्वारा दी गई उपलब्धियों को त्याग दिया तथा भारतीय नरेशों के झगड़ों में हस्तक्षेप न करने का निश्चय किया।

तृतीय कर्नाटक (1757–1763 ई.)

इस युद्ध का तात्कालिक कारण क्लाइव और वाटसन द्वारा बंगाल स्थित चंद्रनगर पर अधिकार की लालसा था। इस युद्ध के अंतर्गत अंग्रेज़ और फ्रांसीसियों के बीच वाण्डीवाश नामक निर्णायक लड़ाई लड़ी गई। 22 जनवरी, 1760 ई. को लड़े गए वाण्डीवाश के युद्ध में अंग्रेज़ी सेना को आयरकूट ने तथा फ्रांसीसी सेना को लाली ने नेतृत्व प्रदान किया। इस युद्ध में फ्रांसीसी पराजित हुए। कर्नाटक के तृतीय युद्ध का समापन पेरिस की संधि से सम्पन्न हुआ। अंग्रेज़ो और फ्रांसीसियों के बीच पेरिस संधि पर हस्ताक्षर करने के साथ ही 1763 ई. सप्तवर्षीय युद्ध समाप्त हो गया।

ईस्ट इंडिया कम्पनी और बंगाल के नवाब (East India Company and Nawab of Bengal)

बंगाल भारत का सबसे समृद्ध प्रांत था। बंगाल में अंग्रेज़ों ने अपना पहला कारखाना 1651 ई. शाहशुजा से अनुमति प्राप्त कर बनाई थी। 1651 ई. में ही शाहशुजा ने अंग्रेज़ों को तीन हजार रुपये वार्षिक के बदले में बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा में मुक्त व्यापार की अनुमति प्रदान कर दी। सूबेदार अजीमुस्यान ने 1698 ई. में कंपनी को सुतानटी, कालिकाता एवं गोविंदपुर की ज़मींदारी दे दी तथा 1717 ई. मुगल सम्राट फरुर्खसियर ने तीन हजार रुपये में वार्षिक कर के बदले में अंग्रेज़ों को व्यापारिक छूट प्रदान कर दी। मुर्शिद कुली खाँ को औरंगज़ेब ने 1700 ई. बंगाल का सुबेदार बनाया तथा 1717 ई. में मुहम्मदशाह के शासनकाल में वह बंगाल का स्वतंत्र शासक बन गया। मुर्शिद कुली खाँ ने अजीमुस्सान (औरंगज़ेब का पोता) से मतभेद हो जाने के कारण अपनी राजधानी ढाका से मुर्शिदाबाद स्थानांतरित कर दी। इसके समय में ज़मींदारों के विद्रोह हुए, मुर्शिद कुली खाँ ने भूमि बंदोबस्त में इजारेदारी प्रथा का प्रारंभ किया। इसके बाद दामाद शुजाउद्दीन बंगाल का नवाब बना। 1739 ई.में शुजाउद्दीन का पुत्र सरफ़राज़ खाँ बंगाल का नवाब बना। इसके समय में बिहार के नाइब सूबेदार अलीवर्दी खाँ द्वारा विद्रोह कर दिया। सरफ़राज़ की मृत्यु के पश्चात् अलीवर्दी खा बंगाल का नवाब बन गया।

अलीवर्दी खाँ (1740–1756 ई.)

अलीवर्दी खाँ ने बंगाल मुगल सम्राट को दो करोड़ रुपये घूस देकर अपने पद को हासिल किया था। इसने यूरोपियों की तुलना मधुमक्खियों से की और कहा कि 'इन्हें न छेड़ा जाए तो शहद देंगी। और यदि छेड़ा जाए, तो काट-काट कर मार डालेंगी।' 1756 ई. में अलीवर्दी खाँ की मृत्यु के पश्चात् सबसे छोटी लड़की का पुत्र सिराजुद्दौला, जिसे अलीवर्दी खाँ ने अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था, नवाब बना। अलीवर्दी ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी और फ्रेंच ईस्ट इंडिया कम्पनी की गतिविधियों को नियंत्रित करते हुए कलकत्ता और चन्द्रनगर की किलेबंदी का विरोध किया। सिराजुद्दौला (1756–1757 ई.) अलीवर्दी खाँ के पश्चात् 10 अप्रैल 1765 ई. को बंगाल का नवाब बना। सिराजुद्दौला ने बंगाल में कंपनी के कर्मचारियों द्वारा किये जा रहे दस्तक के दुरूपयोग को रोकने का प्रयास किया। लेकिन अंग्रेज़ों ने दस्तक (कर) देने से इनकार कर दिया और कलकत्ता से आने वाले मालों पर भारी शुल्क आरोपित कर दिये और यही नहीं नवाब की आज्ञा के बगैर कलकत्ता की किलेबंदी भी शुरू कर दी। प्रतिक्रिया स्वरूप सिराजुद्दौला ने फ्रांसीसियों तथा अंग्रेज़ों को क्रमशः चन्द्रनगर एवं कलकत्ता की किलेबंदी रोकने का आदेश दिया। परंतु अंग्रेज़ों द्वारा इसे अनसुना करने के उपरांत बंगाल के नवाब ने कलकत्ता पर आक्रमण कर दिया।

ब्लैक होल की घटना

कलकत्ता पर अधिकार (15 जून,1756) हेतु नवाब ने स्वयं आक्रमण का नेतृत्व किया। कलकत्ता के गवर्नर ड्रेक को फुल्टा द्वीप में शरण लेनी पड़ी, मिस्टर हॉलवेल ने अपने कुछ सहयोगियों के साथ नवाब के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। 20 जून को फोर्ट विलियम के पतन के बाद सिराज ने बंदी बनाए गए 446 कैदियों को, जिनमें स्त्री और बच्चे भी थे, को एक घुटनयुक्त अँधेरे कमरे में बंद कर दिया। 21 जून को प्रातः काल तक कमरे में केवल 21 व्यक्ति ही जीवित बचे, जिनमे अंग्रेज अधिकारी हॉलवेल भी शामिल था। अंग्रेज़ इतिहासकारों ने जून की इस घटना को काल कोठरी

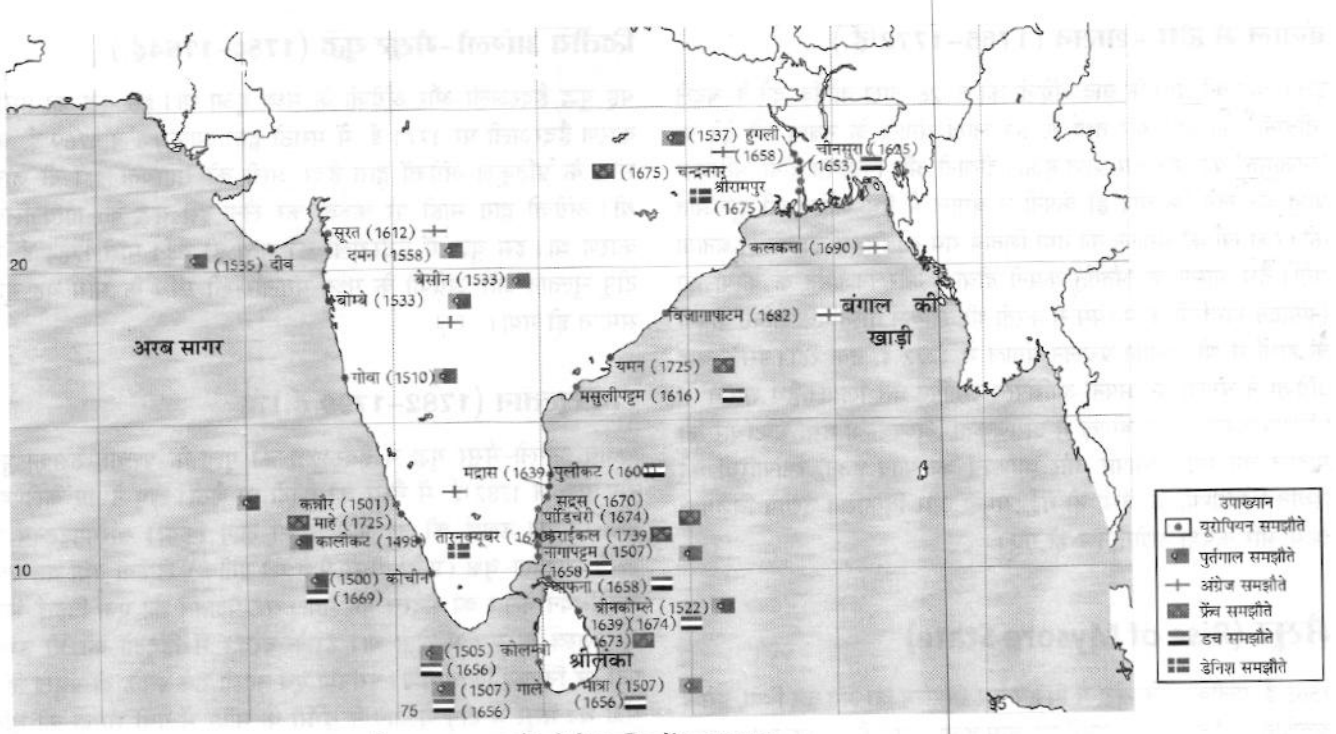

चित्र 15.1: भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन

त्रासदी (Black Hole Tragedy) की संज्ञा दी। क्लाइव ने 2 जून, 1757 को कलाकत्ता पर कब्ज़ा कर लिया। सिराजुद्दौला की कमज़ोर होती स्थिति को देखते हुए अंग्रेज़ों ने इसके विरोधियों मीरजाफर, रायदुर्लभ और जगत सेठ को अपने षड्यंत्र में शामिल किया। इस षड्यंत्र के कारण ही प्लासी का युद्ध हुआ।

प्लासी का युद्ध (1757 ई.)

23 जून, 1757 को मुर्शिदाबाद के दक्षिण में 22 मील की दूरी पर स्थित प्लासी नामक गाँव में दोनों आमने-सामने हुए। नवाब की सेना के वफादर सिपाही मीरमदान और मोहनलाल मैदान में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। सिराजुद्दौला की हत्या मीरजाफर के पुत्र मीरन ने कर दी थी। इस युद्ध के बाद 28 जून, 1757 को अंग्रेज़ो ने मीरजाफर को बंगाल का नवाब बना दिया। 27 दिसंबर, 1760 को वेंसीटार्ट और मीरकासिम के बीच एक गुप्त संधि हुई, जिसके अंतर्गत व्यवस्था की गई थी कि वर्दवान, मिदनापुर और चटगाँव की ज़मींदारी कंपनी को सौंप कर मीरकासिम नायब सूबेदार के रूप में बंगाल की वास्तविक सत्ता का प्रयोग करे तथा मीरजाफर अपने पद पर बना रहे। मीरजाफर को संधि के द्वारा दी गई व्यवस्था स्वीकार्य नहीं थी। मीरजाफर के प्रशासनिक कार्यों में अंग्रेज़ों के बढ़ते हस्तक्षेप के कारण कंपनी और नवाब के संबंधों में कटुता आ गई।

मीरकासिम (1760–1765 ई.)

अलीवर्दी खाँ के बाद बंगाल का दूसरा सबसे योग्य नवाब मीरकासिम था। वह अपनी राजधानी को स्थानांतरित करके मुर्शिदाबाद से मुंगेर ले गया। 1717 ई. में मुगल बादशाह द्वारा प्रदत्त व्यापारिक फरमान का इस समय बंगाल में दरुपयोग देखकर नवाब मीरकासिम ने आंतरिक व्यापार पर सभी प्रकार के शुल्कों की वसूली बंद करवा दी मुंगेर में मीरकासिम ने तोपों तथा तोड़ेदार बंदूकों के निर्माण हेतु कारखानों की स्थापना की। जुलाई, 1763 में मीरकासिम को कंपनी ने बर्खास्त कर मीरजाफर को पुन: बंगाल का नवाब बनाया। मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय, अवध के नवाब शुजाउद्दौला और मीरकासिम ने मिलकर अंग्रेज़ों के विरुद्ध एक सैन्य गठबंधन का निर्माण किया।

बक्सर का युद्ध (1764 ई.)

बिहार के बक्सर के मैदान में अवध के नवाब, मुगल सम्राट तथा मीरकासिम की संयुक्त सेना ने 1764 में अंग्रेज़ों के साथ युद्ध किया। हेक्टर मूनरो के नेतृत्व में अंग्रेज़ी सेना ने 'बक्सर के युद्ध' को जीत लिया। प्लासी के युद्ध ने अंग्रेज़ों की प्रभुता बंगाल में स्थापित की, परंतु बक्सर के युद्ध ने कंपनी को एक अखिल भारतीय शक्ति का रूप दे दिया। क्लाइव ने जुलाई, 1765 में अवध के साथ संधि की। इस संधि को इलाहाबाद की प्रथम संधि के नाम से जाना जाता है। इस संधि के अनुसार, अंग्रेज़ों को कड़ा तथा इलाहाबाद के क्षेत्र एवं हर्जाने के रूप में पचास लाख रुपये मिले, मुगल सम्राट को 26 लाख रुपये प्रतिवर्ष पेंशन के रूप में देने का प्रावधान हुआ तथा अंग्रेज़ों को उत्तरी सरकार की जागीर मिली। इलाहाबाद की दूसरी संधि अगस्त 1765 में अवध के नवाब शुजाउद्दौला और क्लाइव के बीच हुई। इस संधि के अनुसार कंपनी को पचास लाख रुपये तथा चुनार का दुर्ग अवध से प्राप्त हुआ।

बंगाल में द्वैध –शासन (1765–1772 ई.)

इलाहाबाद की संधि के बाद अंग्रेज़ों को रु. 26 लाख वार्षिक देने के बदले 'दीवानी' का अधिकार तथा रु. 63 लाख बंगाल के नवाब को देने पर 'निजामत' का अधिकार प्राप्त हुआ। दीवानी और निजामत दोनों अधिकार प्राप्त कर लेने कि बाद ही कंपनी ने बंगाल में द्वैध-शासन की शुरूआत की। रजा खाँ को बंगाल का तथा शिताब राय को बिहार का दीवान बनाया गया। द्वैध शासन के अंतर्गत कंपनी दीवानी और निजामत के कार्यो का निष्पादन भारतीयों के माध्यम से करती थी, लेकिन वास्तविक शक्ति कंपनी के हाथों में थी। इसका प्रचलन बंगाल में 1772 ई. तक रहा। इसके बाद अंग्रेज़ों ने बंगला पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। द्वैध शासन के परिणामस्वरूप समूचे बंगाल में अराजकता, अव्यवस्था तथा भ्रष्टाचार का माहौल बन गया। व्यापार और वाणिज्य का पतन हुआ, व्यापारियों की स्थिति भिखारियों के जैसी हो गई, समृद्ध और विकसित उद्योग विशेषत: रेशम और कपड़ा उद्योग नष्ट हो गए।

मैसूर (Rise of Mysore State)

1565 ई. गलीकोटा के युद्ध में विजयनगर साम्राज्य का अंत कर दिया, इसके अवशेषों पर जिन स्वतंत्र राज्यों का जन्म हुआ, उनमें मैसूर एक प्रमुख राज्य था। 18वीं सदी में हैदर अली नामक एक योग्य सेनापति अपनी योग्यता के बल पर मैसूर का शासक बना।

हैदर अली (1761–1782 ई.)

हैदर ने 1761 ई. में मैसूर की सत्ता पर (नंदराज को हटाकर) कब्ज़ा कर लिया। 1763 ई. में उसने बेडमोर पर अधिकार कर लिया तथा अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम में स्थापित की। अंग्रेज़ों से इसने ज़ोरदार संघर्ष किया।

प्रथम आंग्लो–मैसूर युद्ध (1767–1769 ई.)

प्रथम आंग्लो-मैसूर युद्ध अंग्रेज़ो की आक्रमणकारी नीति का परिणाम था। इस युद्ध में हैदर अली ने अंग्रेज़ों को करारा जवाब देने के उद्देश्य मराठों तथा निजाम से संधि कर एक सयुंक्त सैनिक मोर्चा बनाया। तत्पश्चात् उसने कर्नाटक पर आक्रमण किया, परंतु 1767 ई. मे हैदर और निजाम तिरुवन्नमलई संगम में पराजित हुए।

मद्रास की संधि (1769 ई.)

मद्रास की संधि 5 अप्रैल, 1769 को हैदरअली और अंग्रेज़ों के बीच हुई। इस संधि में कैदियों की अदला-बदली तथा विजित स्थानों के आपसी बदलाव की व्यवस्था थी। अंग्रेज़ों की प्रतिष्ठा को इस संधि से भारी नुकसान हुआ, क्योंकि एक भारतीय शक्ति ने मद्रास में अंग्रेज़ों के साथ शर्तें निश्चित की।

द्वितीय आंग्लो–मैसूर युद्ध (1780–1784ई.)

यह युद्ध हैदरअली और अंग्रेज़ो के मध्य हुआ था। इस युद्ध का प्रमुख कारण हैदरअली पर 1771 ई. में मराठों द्वारा आक्रमण व 1769 ई. की संधि के प्रतिकूल अंग्रेज़ों द्वारा हैदर अली को सहायता नहीं दी जानी थी। अंग्रेज़ो द्वारा माही पर कब्ज़ा कर लेना इस युद्ध का तात्कालिक कारण था। इस युद्ध में हैदरअली की मृत्यु हो गई। मार्च,1784 ई. में टीपू सुल्तान और अंग्रेज़ो के मध्य मंगलौर की संधि के साथ यह युद्ध समाप्त हो गया।

टीपू सुल्तान (1782–1799 ई.)

द्वितीय आंग्लो-मैसूर युद्ध में हैदरअली की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र टीपू सुल्तान 1782 ई. में मैसूर की गद्दी पर बैठा। टीपू ने नए कैलेण्डर तथा सिक्का ढलाई की नई प्रणाली को लागू किया। श्रीरंगपट्टनम में उसने स्वतंत्रता-वृक्ष (फ्रांस-मैसूर मैत्री का प्रतीक) लगाया तथा वह एक जैकोबियन क्लब का सदस्य बन गया। वह पैदावार का एक तिहाई भाग भू-राजस्व के रूप में लेता था। उसके दरबार में हिंदूओं को भी उच्च पदों पर नियुक्त किया गया। पूरनिया एवं कृष्णा राव इसके दो प्रमुख हिंदू मंत्री थे। मैसूर में टीपू सुल्तान ने श्रृंगेरी के मंदिर में देवी शारदा की मूर्ति के निर्माण के लिए धन दिया था। टीपू सुल्तान ने अपने सैन्य संगठन को यूरोपीय पद्धति के अनुरूप संगठित किया तथा साथ ही अपनी प्रशासनिक व्यवस्था में पाश्चात्य तत्वों को भी अपनाया। वह एक प्रतिभाशाली शासक था, जो कहा करता था—'भेड़ की तरह लंबी जिन्दगी जीने से अच्छा है शेर की तरह एक ही दिन जीना'।

मंगलौर की संधि (1784 ई.)

यह संधि अंग्रेज़ों की ओर से गवर्नर लॉर्ड मैकार्टनी और टीपू के बीच मार्च, 1784 ई. मे हुई। इस संधि द्वारा दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के जीते हुए प्रदेश लौटा दिए तथा बंदियों को भी मुक्त कर दिया।

तृतीय आंग्लो–मैसूर युद्ध (1790–1792 ई.)

लॉर्ड कार्नवालिस ने जब निजाम तथा मराठों को अपने पक्ष में मिलाकर 1790 ई. में टीपू के विरुद्ध त्रिदलीय संगठन बनाया, तब टीपू को युद्ध अवश्यम्भावी प्रतीत होने लगा। टीपू ने अप्रैल, 1790 मे ट्रावनकोर पर आक्रमण कर दिया। अंग्रेज़ों ने ट्रावनकोर के राजा का पक्ष लिया। और युद्ध प्रारम्भ हो गया। इसे तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध कहा जाता है। 1791 ई. में कार्नवालिस द्वारा अरिकेरा नामक स्थान पर टीपू पूर्णतया पराजित हुआ। कड़े प्रतिरोध के बाद टीपू को बाध्य होकर श्रीरंगपट्टनम की संधि (मार्च, 1792) करनी पड़ी। इस संधि के अनुसार उसे अपने देश का लगभग आधा भाग अंग्रेज़ों तथा उसके साथियों को देना पड़ा। टीपू को तीन करोड़ रुपये भी युद्ध क्षति के रूप में देने पड़े।

चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध (1799 ई.)

टीपू सुल्तान ने चतुर्थ आंग्लो-मैसूर युद्ध में अंग्रेज़ो से मुकाबला करने के लिए फ्रांस से सहयोग लेने की दिशा में प्रयास किया। उसने नेपोलियन से भी पत्र व्यवहार किया। 4 मई, 1799 को टीपू संयुक्त अंग्रेज़ी सेना से बहादुरी के साथ लड़ता हुआ मारा गया और इसके साथ ही मैसूर पर अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया। मैसूर पर विजय प्राप्त कर लेने के उपलक्ष्य में वेलेजली को 'मार्किवस' की उपाधि प्रदान की गई।

अध्याय सार संग्रह

- भारत में यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों के आगमन का क्रम पुर्तगाली, डच, अंग्रेज़, डेन व फ्रांसीसी रहा।
- भारत में आने वाला प्रथम यूरोपीय यात्री 'वास्कोडिगामा, द्वितीय पुर्तगाली पेड्रो अल्वारेज कैब्राल, प्रथम पुर्तगाली गवर्नर 'फ्रांसिस्को दी अल्मेडा था जबकि प्रथम अंग्रेज़ जॉन मिल्डेन हॉल था।
- बम्बई, कलकत्ता और मद्रास तथा दिल्ली के संस्थापक क्रमश: गेराल्ड औंगियार, जॉब चॉरनाक, फ्रांसिस डे तथा एडविन लुटियन्स थे।
- अंग्रेज़ों का विरोध करने वाला पहला विद्रोही जमींदार बर्दवान का जमींदार शोभा सिंह था।
- बंगाल में अंग्रेज़ी व्यापार की मुख्य वस्तुएँ थीं—रेशम, सूती कपड़े, शोरा और चीनी।
- 1757 में कलकत्ता को जीतने के बाद सिराजुद्दौला ने इसका नाम अलीनगर रख दिया था।
- 1767-1772 तक बंगाल में चले द्वैध शासन को बंगाल के गवर्नर वारेन हेस्टिंग्स ने समाप्त किया।
- द्वैध शासन के समय कंपनी ने दीवानी कार्यों के लिए राजा सिताब राय को बिहार तथा मुहम्मद रजा खाँ को बंगाल का नवाब दीवान नियुक्त किया।
- प्लासी के युद्ध में अंग्रेज़ों का सेनापति क्लाइव तथा नवाब का सेनापति मीर जाफर थे।
- फरवरी 1760 में क्लाइव कुछ महीने के लिए गवर्नर का दायित्व हॉलवेल को सौंप कर इंग्लैण्ड वापस चला गया। हॉलवेल ने मीर जाफर को पदच्युत करने की योजना बनायी।
- अल्फ्रेड लायल के अनुसार, 'प्लासी में क्लाइव की सफलता ने बंगाल में युद्ध तथा राजनीति का एक अत्यंत विस्तृत क्षेत्र अंग्रेज़ों के लिए खोल दिया।'
- मुर्शिदाबाद में मीर जाफर को 'कर्नल क्लाइव का गीदड़' कहा जाता था।
- मीर जाफर के काल में ही अंग्रेज़ों ने 'बाँटों और राज करो' की नीति को जन्म देते हुए एक गुट को दूसरे गुट से लड़ाने की शुरुआत की।
- बक्सर के युद्ध में अंग्रेज़ी सेना का नेतृत्व हेक्टर मुनरो ने किया।
- पी. ई. रॉबर्ट ने बक्सर के युद्ध के बारे में कहा था कि, 'प्लासी की अपेक्षा बक्सर को भारत में अंग्रेज़ी प्रभुता की जन्म भूमि मानना कहीं अधिक उपयुक्त है।'
- फ्रांसीसी क्रांति से प्रभावित होकर टीपू सुल्तान ने श्रीरंगपट्टनम में जैकोबिन क्लब की स्थापना की।
- चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध के समय अंग्रेजी सेना का वेलेजली हैरिस और स्टुअर्ट ने नेतृत्व किया।
- 1942 के बाद फ्रांसीसी व्यापारिक लाभ कमाने की तुलना में राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति की दिशा में सक्रिय हो गए। फलस्वरुप अंग्रेजों और फ्रांसिसियों के बीच टकराव प्रारंभ हो गया।

16 अध्याय

गवर्नर, गवर्नर-जनरल एवं वायसराय

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- बंगाल के गवर्नर व बंगाल के गवर्नर-जनरल तथा भारत के गवर्नर-जनरल एवं वायसराय की नीतियां और उनके द्वारा भारत के लिए तैयार की गयी दमन कारी नीतियाँ कौन-कौन सी थीं।
- गवर्नर, गवर्नर जनरल एवं वायसराय भारत में ब्रिटिश सत्ता स्थापित करने के लिए किस-किस प्रकार की नीतियों और कार्यक्रमों द्वारा उसे सफल बनाने में सक्षम रहे।

बंगाल के गवर्नर (Governor of Bengal)

1772 ई. तक ईस्ट इंडिया कंपनी का कार्य संचालन बंगाल के गवर्नर के द्वारा किया गया। 1772 से 1833 ई. तक बंगाल का गवर्नर, गवर्नर जनरल बन गया। फिर 1833 ई. से 1857 ई. के बीच वह भारत का गवर्नर जनरल कहा जाने लगा। 1857 ई. क्रांति के बाद भारत के गवर्नर-जनरल का पद समाप्त कर वायसराय नामक नए पद का सृजन किया गया।

लॉर्ड क्लाइव (1757–1760 ई. 1765–1767 ई.)

प्लासी की विजय (1757 ई.)के बाद क्लाइव को बंगाल का गवर्नर बनाया गया। क्लाइव ने बक्सर के युद्ध (1764)' में सफलता के बाद 1765 ई. में बंगाल में द्वैध शासन लागू किया, जो 1772 ई. तक चलता रहा। इसी के कार्यकाल मे 'श्वेत विद्रोह' हुआ था।

क्लाइव के बाद बंगाल के गवर्नर

- **वेंसिटार्ट** (1760-65) बक्सर के युद्ध के समय वेंसिटार्ट बंगाल का गवर्नर था।
- **वेरेलस्ट** (1767-69) द्वैध शासन के समय यह बंगाल का गवर्नर था।
- **कर्टियर** (1769-72) इसके काल में ही 1770 ई. में बंगाल में आधुनिक भारत का प्रथम अकाल पड़ा।
- **वारेन हेस्टिंग्स** (1772-74) यह बंगाल का अंतिम गवर्नर था। इसी के काल मे बंगाल का गवर्नर, गवर्नर जनरल हो गया। इसने बंगाल में द्वेध शासन को समाप्त कर दिया।

बंगाल के गवर्नर-जनरल (Governor General of Bengal)

वारेन हेस्टिंग्स (1772–1785 ई.)

वारेन हेस्टिंग्स को रेग्युलेटिंग एक्ट के तहत बंगाल का प्रथम गवर्नर जनरल बनाया गया। हेस्टिंग्स ने 1772 ई. में राजस्व बोर्ड का गठन किया तथा सरकारी कोष का स्थानातंरण मुर्शिदाबाद से कलकत्ता कर दिया। वारेन हेंस्टिंग्स को भारत में न्यायिक सेवा का जन्मदाता माना जाता है। इसी के काल में कलकत्ता मे एक सुप्रीम कोर्ट की स्थापना 1779 ई. में की गई। इसका मुख्य न्यायाधीश एलीजा इम्फे था। वारेन हेस्टिंग्स के काल मे बनारस की संधि (1773 ई.) फैजाबाद की संधि (1775 ई.) एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना (1784 ई.) तथा नंद कुमार पर अभियोग (1775 ई.) जैसे प्रमुख घटनाएँ घटीं। इसे रियासतों के साथ होने वाली Ring of Fence (घेरे की नीति) का जनक माना जाता है। हेस्टिंग्स बंगाल का एकमात्र ऐसा गवर्नर-जनरल था, जिस पर बर्क ने महाभियोग का मुकदमा दायर किया था। इसी के काल में 1784 ई. का पिट्स इंडिया एक्ट पारित हुआ, जिसके अंतर्गत परिषद की संख्या घटाकर तीन कर दी गई थी।

लॉर्ड कार्नवालिस (1786–1793 ई.)

1786 ई. के संशोधन एक्ट द्वारा कार्नवालिस को कमाण्डर इन चीफ बनाया गया। इसने 1789 ई. में दासों के व्यापार पर रोक लगा दी। भारत में कार्नवालिस को सिविल सेवा तथा पुलिस सेवा का जन्मदाता माना जाता